Volume: 5 **Issue: 4** **Pages: 98-102**

इक्कीसवीं सदी में भारतीय साहित्य और सिनेमा का वैश्वीकरण

[*1] डॉ. मुमताज़ परवीन

[*1] सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, आइएसबीएम विश्वविद्यालय, छुरा, जिला-गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 19/March/2026
Accepted: 16/April/2026

***Corresponding Author**
डॉ. मुमताज़ परवीन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, आइएसबीएम विश्वविद्यालय, छुरा, जिला-गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण और डिजिटल क्रांति ने भारतीय साहित्य और सिनेमा को अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय विस्तार प्रदान किया है। पहले जहाँ भारतीय रचनाएँ सीमित भौगोलिक क्षेत्रों तक ही पहुँच पाती थीं, वहीं अब इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीकों के कारण वे विश्व के प्रत्येक कोने तक पहुँच रही हैं। यह शोध-पत्र इस तथ्य का विश्लेषण करता है, कि किस प्रकार भारतीय रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर विश्व संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग बन गई हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनुवाद, प्रवासी लेखन, अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, ओटीटी प्लेटफॉर्म तथा वैश्विक बाजार की संरचना ने भारतीय साहित्य और सिनेमा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया है। साथ ही यह भी प्रतिपादित किया गया है, कि इस वैश्वीकरण ने भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को एक ओर सुदृढ़ किया है, तो दूसरी ओर उसे नई चुनौतियों के सम्मुख भी खड़ा किया है। वैश्वीकरण के युग में भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ साहित्य और सिनेमा राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकलकर विश्व-मंच पर स्थापित हो चुकी हैं। भारतीय कथाएँ, मिथक, लोकपरंपराएँ, सामाजिक यथार्थ और आध्यात्मिक दृष्टि आज विभिन्न भाषाओं और माध्यमों के जरिए विश्व के पाठकों और दर्शकों तक पहुँच रही हैं। यह प्रक्रिया केवल प्रसार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, प्रभाव और आदान-प्रदान का भी प्रतीक है।

मुख्य शब्द: वैश्वीकरण, साहित्य, सिनेमा, तकनीक, सकारात्मक प्रभाव, नकारात्मक प्रभाव, महत्व, निष्कर्ष।

प्रस्तावना:

वैश्वीकरण के समकालीन परिदृश्य में साहित्य और सिनेमा केवल कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम न रहकर सांस्कृतिक कूटनीति और राष्ट्रीय पहचान के वाहक बन गए हैं। भारत, जो अपनी बहुभाषिकता, बहुसांस्कृतिकता और प्राचीन परंपराओं के लिए विख्यात है, इक्कीसवीं सदी में विश्व-संस्कृति के साथ सक्रिय संवाद स्थापित कर रहा है। समय के साथ समाज के सदस्यों की परिवर्तित मनोवृतियों के चलते संस्कृति का बाह्य रूप कुछ अंशों में भले ही बदल नजर आए लेकिन उसका अंत संबंधी पिछली स्थितियों से अवश्य रहता है यही स्थिरता 'संस्कृति' की महत्वपूर्ण विशेषता होती है। "समाज और जीवन की मूलभूत प्रवृत्तियों का नाम ही संस्कृति है" [1] भारतीय साहित्य और सिनेमा ने अपने कथ्य, शिल्प और तकनीक के माध्यम से वैश्विक समाज की संवेदनाओं को स्पर्श किया है, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय विमर्श का अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं। आधुनिक वैश्विक समाज की साझा समस्या बन चुकी है। साथ ही स्त्री, दलित, आदिवासी और पर्यावरण संबंधी विमर्शों ने भारतीय साहित्य को समकालीन वैश्विक चिंतन से जोड़ा है।

इक्कीसवीं सदी में भारतीय साहित्य का वैश्वीकरण मुख्यतः डिजिटल और अनुवाद क्रांति के कारण संभव हुआ है। ई-बुक, ऑडियोबुक और ऑनलाइन प्रकाशन ने भारतीय भाषाओं की रचनाओं को वैश्विक पाठकों के लिए सुलभ बना दिया है। हिंदी, बंगाली, तमिल, मलयालम, उर्दू आदि भाषाओं की उत्कृष्ट कृतियाँ अब अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में तेजी से अनूदित हो रही हैं। अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों ने भी भारतीय साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाई है। अरुंधति रॉय, किरण देसाई और अरविंद अडिगा जैसे लेखकों ने अपने उपन्यासों जैसे The God of Small Things, The Inheritance of Loss और The White Tiger के माध्यम से भारतीय समाज, वर्गभेद, गरीबी, प्रवासन और वैश्वीकरण की जटिलताओं को विश्व के सामने रखा। इससे भारतीय साहित्य केवल राष्ट्रीय न रहकर वैश्विक अनुभव का साहित्य बन गया। झुम्पा लाहिड़ी जैसे लेखकों की कृतियाँ इस बात का उदाहरण है, कि भारतीय अनुभव अब विश्व अनुभव का हिस्सा बन चुका है। इन कृतियों में स्थानीय जीवन की माटी की गंध होते हुए भी एक सार्वभौमिक मानवीय पीड़ा और आकांक्षा की अनुगूँज सुनाई देती है, जो उन्हें विश्व-साहित्य के समकक्ष प्रतिष्ठित करती है।

भारतीय फिल्मों की वैश्विक सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है, कि भारतीय कथानक और भावनाएँ सार्वभौमिक हैं। बाहुबली, आरआरआर और दंगल जैसी फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय बॉक्स ऑफिस पर सफलता प्राप्त कर भारतीय सिनेमा को नई पहचान दी। इन फिल्मों ने भारतीय इतिहास, पौराणिकता, खेल, परिवार और संघर्ष जैसे विषयों को वैश्विक दर्शकों के सामने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इसी कालखंड में भारतीय सिनेमा ने भी अपने रूप, संवेदना और तकनीक में अद्भुत विस्तार पाया है।

शोध के उद्देश्य

1. इक्कीसवीं सदी में भारतीय साहित्य के वैश्वीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
2. भारतीय सिनेमा के अंतरराष्ट्रीय विस्तार के कारणों का विश्लेषण करना।
3. वैश्वीकरण के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों को स्पष्ट करना।

यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है, कि इक्कीसवीं सदी में भारतीय साहित्य और सिनेमा का वैश्वीकरण मुख्यतः डिजिटल तकनीक, अनुवाद और वैश्विक बाजार के कारण संभव हुआ है तथा इसने भारत की सांस्कृतिक शक्ति को सुदृढ़ किया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध-लेख, पत्रिकाओं, इंटरनेट आदि का प्रयोग किया गया है ।

शोध-आलेख

भारतीय रचनाओं जैसे कहानियों, विचारों, भाषाओं और फिल्मों का विश्व-स्तर पर प्रचार-प्रसार, स्वीकृति और प्रभाव ही भारतीय साहित्य और सिनेमा का वैश्वीकरण कहलाता है। विश्व स्तर पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी की कृति 'गीतांजलि' के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला, जो भारतीय बांग्ला साहित्य को विश्व में पहचान दिलाया । सलमान रुश्दी, अरुंधति रॉय, झुम्पा लाहिड़ी आदि की रचनाओं ने अंतरराष्ट्रीय पाठक वर्ग बनाया। विदेशों में बसे भारतीयों ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच दिया। जिसमें हिन्दी साहित्य की उषा प्रियंवदा चर्चित नाम हैं इसके अलावा भी साहित्यिक उत्सव जैसे जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल आदि कार्यक्रमों से वैश्विक संवाद बढ़ा है ।

भारतीय फिल्म उद्योग ने 1990 में 948 फिल्मों के अपने चरम निर्माण को छुआ, लेकिन दशक के अंत तक यह घटकर 600-700 फिल्मों तक सीमित हो गया। यह गिरावट टेलीविजन के प्रसार और सस्ते होते सैटेलाइट प्रसारण को दर्शाती है। वर्तमान भारतीय फिल्मों, विशेषकर दक्षिण भारतीय तमिल फिल्मों के विदेशी निर्माण अधिकार सिंगापुर और मलेशिया को बेचे जाते हैं जहाँ बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी बसे हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी और मलयालम फिल्में अरब देशों में भी प्रदर्शित होती हैं। पहले, प्रायोजक तमिल फिल्मों को पूरा होते ही रिलीज़ कर देते थे, लेकिन कुछ फिल्में विदेशों में कभी वितरित नहीं हुईं। उपयुक्त तकनीक की व्यापक उपलब्धता को देखते हुए कॉपीराइट का संरक्षण एक बड़ी समस्या है। इस समस्या का एक उदाहरण यह है कि सिंगापुर के भारतीय आवासीय क्षेत्रों में तीन घंटे की तीन भारतीय फिल्मों का एक पैकेज 15 सिंगापुर डॉलर में उपलब्ध है।

सीडी राइटर और वीडियो कैप्चर मशीनों के प्रसार ने कॉपियों के प्रवाह को बढ़ावा दिया है। कुछ शहरी दुकानें खुलेआम रिकॉर्ड किए गए वीडियो को डिजिटाइज़ करने का कारोबार करती हैं। भारत में इस गतिविधि का कुछ विरोध तो है लेकिन वह नाममात्र का ही है। पड़ोसी देशों में इसका पुनरुत्पादन काफी सक्रिय है। हालांकि, इन्हीं तकनीकी प्रगति के माध्यम से भारतीय सिनेमा ने तेजी से बाहरी दुनिया में पैठ बनाई है।

हाल ही में भारतीय सिनेमा ने विदेशों में ज़बरदस्त लोकप्रियता हासिल की है, जिससे इसकी छवि जटिल हो गई है। उदाहरण के लिए सलाम बॉम्बे (1988), मिसिसिपी मसाला (1991) और कामसूत्र (1997) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुईं और घरेलू समीक्षकों के बीच तीखी बहसें छेड़ दीं। इन फिल्मों की निर्देशक मीरा नायर का जन्म ओडिशा में हुआ और उन्होंने हार्वर्ड से शिक्षा प्राप्त की। अब वह कनाडा में रहती हैं और उनकी गतिविधियाँ उत्तरी अमेरिका पर केंद्रित हैं। इसके अलावा प्रसिद्ध कपूर परिवार के सदस्य शेखर कपूर (1945) अपनी फिल्म मिस्टर इंडिया (1987) से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपनी फिल्म बैंडिट क्वीन (1994) और एलिजाबेथ (1999) से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक ध्यान आकर्षित किया। एलिजाबेथ फिल्म 16वीं सदी के इंग्लैंड में आधारित थी और इसमें भारतीयता का कोई नामोनिशान नहीं था। 2002 के अकादमी पुरस्कारों में हिंदी फिल्म लगान (2001) ने ऑस्कर पुरस्कार न मिलने के बावजूद विश्व का ध्यान आकर्षित किया। कान फिल्म महोत्सव में नई फिल्म देवदास (2002) दिखाई गई, लेकिन उसे भी कोई पुरस्कार नहीं मिला। हालांकि दोनों ही फिल्में सफल नहीं रहीं, लेकिन उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया ने भारतीय सिनेमा की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित किया। लंदन में भारतीय संगीत नाटक बॉम्बे ड्रीम्स की सफलता ने इस प्रतिष्ठा को और भी मजबूत किया। यह सफलता सिनेमा से परे भारतीय कला और मनोरंजन की वैश्विक अपील के विस्तार को रेखांकित करती है। भारतीय फिल्मों ने मनोरंजन, तकनीक और सांस्कृतिक विविधता के कारण विश्व में लोकप्रियता हासिल की है । ओटीटी प्लेटफॉर्म से बॉलीवुड और क्षेत्रीय सिनेमा के विस्तार में मदद मिली है । सत्यजीत रे की फिल्में विश्व सिनेमा में क्लासिक मानी जाती हैं। जैसे लगान फिल्म का ऑस्कर में नामांकन हुआ है, बाहुबली और आरआरआर जैसी फिल्मों को वैश्विक बॉक्स ऑफिस में सफलता मिली है । आमिर खान की फिल्में चीन सहित कई देशों में लोकप्रिय हुईं। तेलुगु, तमिल, मलयालम, मराठी, पंजाबी फिल्मों ने भी विश्व-स्तर पर पहचान बनाई, वैश्वीकरण के बहुत से सकारात्मक प्रभाव हैं, जैसे भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार, भाषाई और सांस्कृतिक संवाद, आर्थिक लाभ आदि । वहीं दूसरी ओर स्थानीयता का क्षरण, पश्चिमी प्रभाव का बढ़ना, बाज़ारवाद के कारण सामग्री में परिवर्तन आदि चुनौतियाँ भी हैं । भारतीय साहित्य ने अनुवाद, प्रवासी लेखन और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के माध्यम से विश्व-साहित्य में अपना स्थान बनाया है। अरुंधति रॉय, किरण देसाई और अरविंद अडिगा जैसे रचनाकारों ने भारतीय जीवन की जटिलताओं को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत कर अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त की है। भारतीय हिन्दी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी भी विश्व पटल पर विख्यात साहित्यकार है ।

फिल्मों के माध्यम से समाज की समस्याएँ, परंपराएँ, संघर्ष, आकांक्षाएँ और परिवर्तन व्यापक स्तर पर अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए भारतीय सिनेमा का समाज पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। भारतीय सिनेमा ने भी तकनीकी उन्नति और डिजिटल माध्यमों के कारण विश्व स्तर पर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। बाहुबली, आरआरआर और दंगल जैसी फिल्मों ने भारतीय कथाओं और मूल्यों को विश्व के दर्शकों तक पहुँचाया है। साथ ही सत्यजीत रे की मानवीय दृष्टि ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई जिसकी परंपरा आज भी निरंतर विकसित हो रही है। भारतीय सिनेमा समाज का दर्पण भी है और दिशा-निर्देशक भी। अनेक फिल्मों ने सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक असमानता, शिक्षा, स्वच्छता, भ्रष्टाचार और गरीबी जैसे मुद्दों को उठाकर लोगों को सोचने के लिए प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए दंगल ने बेटियों की शिक्षा और महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया, जबकि 'थ्री इडियट' ने

शिक्षा-प्रणाली की खामियों और विद्यार्थियों पर पड़ने वाले मानसिक दबाव को उजागर किया है और समाज सुधार का माध्यम बन रहा है। भारतीय सिनेमा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिल्मों के माध्यम से भारतीय परंपराएँ, त्योहार, पारिवारिक संबंध, वेशभूषा, भाषा और रीति-रिवाज देश-विदेश तक पहुँचते हैं। 'हम आपके हैं कौन'जैसी फिल्मों ने भारतीय पारिवारिक संस्कृति और संस्कारों को लोकप्रिय बनाया। इससे समाज में सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है और नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है। सिनेमा का युवाओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है वे फिल्मों से फैशन, भाषा, जीवन-शैली और व्यवहार सीखते हैं। सकारात्मक फिल्मों से युवाओं में देशभक्ति, संघर्षशीलता और नैतिकता के भाव विकसित होते हैं, जबकि हिंसा और अश्लीलता से युक्त फिल्मों का नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है। 'चक दे इंडिया' जैसी फिल्में युवाओं में राष्ट्रप्रेम और टीम-भावना उत्पन्न करती हैं, जबकि कुछ फिल्मों में दिखाए गए अवास्तविक जीवन-शैली से भ्रम भी पैदा हो सकता है।

भारतीय सिनेमा सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक भी है। यह समाज में नई सोच और आधुनिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। अंतरजातीय विवाह, स्त्री स्वतंत्रता, शिक्षा, पर्यावरण और मानवाधिकार जैसे विषयों को फिल्मों ने व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है। साथ ही सिनेमा समाज में संवाद और बहस की स्थिति उत्पन्न करता है, जिससे परिवर्तन की प्रक्रिया तेज होती है। हालाँकि सिनेमा के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे जाते हैं। अत्यधिक हिंसा, अपराध, नशाखोरी और भौतिकवादी जीवन-शैली का चित्रण समाज में अनुकरण की प्रवृत्ति पैदा कर सकता है। इससे विशेषकर किशोर और युवा वर्ग प्रभावित होता है अतः सिनेमा की सामाजिक जिम्मेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अंततः कहा जा सकता है कि भारतीय सिनेमा समाज का प्रतिबिंब होने के साथ-साथ उसे दिशा देने वाली शक्ति भी है। यह समाज को जागरूक, संगठित और प्रेरित करने की क्षमता रखता है, बशर्ते इसका उपयोग सकारात्मक दृष्टि से किया जाए।

इक्कीसवीं सदी में भारतीय मूल के अंग्रेज़ी लेखकों ने अपनी कृतियों के माध्यम से वैश्विक साहित्य में भारतीय अनुभव, इतिहास, प्रवासी जीवन, उपनिवेशवाद की विरासत और सांस्कृतिक पहचान जैसे विषयों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उदाहरणस्वरूप सलमान रुश्दी की कृतियाँ इतिहास, मिथक और जादुई यथार्थवाद का अनूठा समन्वय प्रस्तुत करती हैं। उनका उपन्यास 'मिडनाइट्स चिल्ड्रेन' भारत के विभाजन और स्वतंत्रता-प्राप्ति के दौर को प्रतीकात्मक और कल्पनाशील शैली में चित्रित करता है जबकि 'द सैटेनिक वर्सेज' प्रवासी जीवन, धार्मिक पहचान और सांस्कृतिक संघर्ष की जटिलताओं को सामने लाता है।

अरुंधति रॉय ने अपने उपन्यास 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' में केरल के सामाजिक जीवन, जाति-व्यवस्था, पारिवारिक संबंधों और बाल-मन की संवेदनाओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से उकेरा है। यह कृति भारतीय समाज की सूक्ष्म संरचनाओं को वैश्विक पाठक के सामने उद्घाटित करती है। उनका दूसरा उपन्यास 'द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस' समकालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक और मानवीय जटिलताओं को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत करता है। प्रवासी भारतीय अनुभव को अभिव्यक्त करने में झुम्पा लाहिड़ी का विशेष स्थान है। उनकी कहानी-संग्रह 'इंटरप्रेटर ऑफ मैलडीज़' भारतीय प्रवासियों के अकेलेपन, सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचान-संकट को संवेदनशीलता से चित्रित करता है, जबकि उपन्यास द नेमसेक दूसरी पीढ़ी के प्रवासी युवाओं की मनःस्थिति और सांस्कृतिक अस्मिता के प्रश्नों को उजागर करता है। उनकी रचनाएँ भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों के बीच पुल का कार्य करती हैं।

भारतीय साहित्य की सार्वभौमिकता पर ए. के. रामानुजन का कहना है कि - "The universal in India is not a negation of the local; it is the sum of all locals." [2] भारतीय संस्कृति और विश्व साहित्य के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन है कि - "Whatever we understand and enjoy in human products instantly becomes ours, wherever they might have their origin." [3] भारतीय साहित्य की बहुभाषिक वैश्विकता को स्पष्ट करते हुए शिशिर कुमार दास जी कहते है कि - "Indian literature is one though written in many languages." [4] रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ये कहा कि साहित्य मनुष्य के हृदय का इतिहास है, जिसमें उसके सुख-दुःख, आशा-निराशा और जीवन के सत्य अंकित रहते हैं। वहीं मुंशी प्रेमचंद ने कहा कि - साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, उसका पथ-प्रदर्शक भी होता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि - साहित्य मनुष्य की सहानुभूति को व्यापक बनाता है और उसे मानवता के निकट ले जाता है। रामधारी सिंह दिनकर का कथन है, कि - साहित्य वह शक्ति है, जो राष्ट्र की आत्मा को जाग्रत करती है। सभी साहित्यकारों ने मनुष्य जीवन, समाज, राष्ट्र की संवेदना के संयोग को साहित्य कहा। और इन्हीं प्रमुख अंगों का वैचारिकी एवं मानसिक अभिव्यक्ति साहित्य में दिखाई देती है चाहे वह किसी भी देश का साहित्य हो। इतिहास और पर्यावरणीय चेतना के संदर्भ में अमिताव घोष की कृतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनका उपन्यास 'द शैडो लाइन्स' राष्ट्र सीमाओं और स्मृति के प्रश्नों पर विचार करता है, जबकि 'सी ऑफ पॉपीज़' औपनिवेशिक काल, व्यापार और प्रवासन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को महाकाव्यात्मक शैली में प्रस्तुत करता है। घोष की रचनाएँ यह दर्शाती हैं, कि भारतीय इतिहास और वैश्विक इतिहास परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं।

'मिडनाइट्स चिल्ड्रेन' प्रसिद्ध लेखक सलमान रुश्दी का 1981 में प्रकाशित उपन्यास है। यह कृति भारतीय इतिहास, राजनीति और समाज को एक परिवार की कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करती है, जो उपन्यास नायक सलीम सीनाई की आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। सलीम का जन्म ठीक 15 अगस्त 1947 की आधी रात को होता है, जब भारत स्वतंत्र हो रहा होता है इसलिए उसका जीवन भारत के इतिहास से गहराई से जुड़ जाता है। सलीम को यह विशेष शक्ति प्राप्त होती है, कि वह उन सभी बच्चों के मन पढ़ सकता है, जो उसी समय पैदा हुए थे इसलिए इस उपन्यास का शीर्षक मिडनाइट्स चिल्ड्रेन रखा गया । सलीम के माध्यम से लेखक भारत के विभाजन, स्वतंत्रता, युद्धों, आपातकाल और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों को दर्शाता है। कहानी में यह भी दिखाया गया है, कि किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन और राष्ट्रीय घटनाएँ एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। सलीम का परिवार भी इन ऐतिहासिक घटनाओं के प्रभाव से बार-बार टूटता-बिखरता है। उपन्यास में जादुई यथार्थवाद का प्रयोग हुआ है, जिसमें वास्तविक इतिहास के साथ कल्पना का मिश्रण है। इस उपन्यास की एक पंक्ति है कि "To understand just one life, you have to swallow the world." [5] अरुंधति रॉय के उपन्यास 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' में केरल के आयेमनेम गाँव में रहने वाले जुड़वाँ भाई-बहन एस्था और राहेल के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती कहानी है। उनका बचपन अनेक दुखद घटनाओं से भरा है। उनकी माँ अम्मू जो अपने पति से अलग होकर मायके में रहती है, समाज के कठोर नियमों और पारिवारिक बंधनों में घिरी हुई है। उपन्यास का मुख्य संघर्ष तब शुरू होता है जब अम्मू का संबंध एक दलित युवक वेलुथा से बनता है। यह प्रेम संबंध उस समय के जातिगत नियमों के विरुद्ध है, इसलिए परिवार और समाज इसे अस्वीकार करता है, परिणामस्वरूप वेलुथा को क्रूरता से मार दिया जाता है और अम्मू तथा उसके बच्चों का जीवन बिखर जाता है। उनकी चचेरी बहन सोफी मोल की आकस्मिक मृत्यु, जो पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल देती है। इन घटना के कारण एस्था और राहेल का बचपन छिन जाता है और वे जीवन भर उस आघात से उबर नहीं पाते। उपन्यास वर्तमान और अतीत के बीच लगातार आवाजाही करते हुए दिखाता है, कि बचपन की छोटी-छोटी घटनाएँ कैसे पूरे जीवन को प्रभावित

कर देती हैं। इस कथा की एक पंक्ति -"Things can change in a day." [6] अर्थात चीजें एक दिन में बदल सकती है, जो जीवन की अनिश्चितता को सूचित करता है।

'द नेमसेक' प्रसिद्ध भारतीय-अमेरिकी लेखिका झुम्पा लाहिड़ी का 2003 में प्रकाशित उपन्यास है। यह प्रवासी भारतीय जीवन, पहचान और पीढ़ियों के संघर्ष की मार्मिक कहानी प्रस्तुत करता है। जिसकी कथा बंगाली दंपति अशोक और अशीमा गांगुली से शुरू होती है, जो भारत से अमेरिका जाकर बसते हैं। विदेशी भूमि में वे अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं को बचाए रखने का प्रयास करते हैं, लेकिन उनके बच्चों का पालन-पोषण अमेरिकी परिवेश में होता है। उनके बेटे गोगोल गांगुली का नाम एक रूसी लेखक के नाम पर रखा जाता है, जो उसे हमेशा अजीब और असहज लगता है। वह अपने नाम और भारतीय पहचान से दूर भागना चाहता है, इसलिए बाद में अपना नाम बदलकर निखिल रख लेता है। गोगोल का जीवन इसी द्वंद्व में बीतता है । एक ओर भारतीय जड़ें और परिवार, दूसरी ओर अमेरिकी जीवन शैली और स्वतंत्रता। वह प्रेम, करियर और रिश्तों में भी स्थिरता नहीं पा पाता। जब उसके पिता अशोक की मृत्यु होती है, तब उसे अपने परिवार और अपनी जड़ों का महत्व समझ में आता है। इस उपन्यास का एक विचार है कि - "Pet names are a persistent remnant of childhood." [7] यह कथन नाम, पहचान और सांस्कृतिक स्मृति के संबंध को रेखांकित करता है।

'द शैडो लाइन्स' प्रसिद्ध भारतीय लेखक अमिताभ घोष का 1988 में प्रकाशित उपन्यास है। यह स्मृति, इतिहास, राष्ट्र और सीमाओं की अवधारणा पर आधारित एक गहन और मार्मिक कृति है। उपन्यास का कथानक एक अनाम कथावाचक के दृष्टिकोण से प्रस्तुत होता है, जो अपने बचपन और युवावस्था की यादों के माध्यम से कहानी सुनाता है। कहानी भारत, इंग्लैंड और बांग्लादेश के बीच घटित घटनाओं को जोड़ती है। कथावाचक का परिवार कोलकाता में रहता है और उसका गहरा संबंध अपने चचेरे भाई त्रिदीब से है, जो उसे कल्पना, इतिहास और दुनिया को देखने का नया दृष्टिकोण देता है। त्रिदीब के माध्यम से कथावाचक लंदन और ढाका जैसे शहरों की कहानियाँ सुनता है और समझता है, कि सीमाएँ केवल मानचित्र पर बनी रेखाएँ हैं। कहानी में 1964 के भारत-पाकिस्तान दंगों की पृष्ठभूमि भी है, जिनमें ढाका (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) में त्रिदीब की मृत्यु हो जाती है। यह घटना पूरे परिवार को झकझोर देती है और कथावाचक को यह समझने पर मजबूर करती है, कि राष्ट्र और सीमाएँ लोगों के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव डालती हैं। उपन्यास में अतीत, वर्तमान, स्मृति और वास्तविकता के बीच लगातार आवाजाही होती रहती है। इससे यह दिखाया गया है, कि इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि लोगों की यादों और अनुभवों से भी बनता है। संक्षेप में 'द शैडो लाइन्स' यह संदेश देता है, कि भौगोलिक सीमाएँ मनुष्यों द्वारा बनाई गई हैं, जबकि मानवीय संबंध इन सीमाओं से कहीं अधिक गहरे और स्थायी होते हैं। अमिताव घोष ने "Borders are not on the ground but in the mind." [8] पंक्ति के माध्यम से स्पष्ट किया, कि राष्ट्र, सीमाओं और मानवीय चेतना के विषय पर एक साहित्यकार ही गहरी टिप्पणी प्रस्तुत करता है। इन उपन्यासों ने साहित्य को नई संवेदनाएँ और विषय दिए जैसे पहचान का संकट, प्रवासी जीवन, राष्ट्र और सीमाएँ, जाति-व्यवस्था, स्मृति और इतिहास । इन सभी कृतियों ने मिलकर भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य को विश्व साहित्य के केंद्र में स्थापित किया और नई पीढ़ी के लेखकों को सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर लिखने की प्रेरणा दी। हालांकि भाषागत साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तः सवाल उठ सकता है कि केवल भारतीय भाषा साहित्य का वैश्वीकरण में योगदान को चिन्हित किया जाए परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है लेखक की भाषा भारतीय या विदेशी हो आसक्ति है परंतु लेखक भारतीय मूल का होना चाहिए । यह प्रश्न इन उपन्यासों की कथाएँ और विषय सिनेमा के लिए भी अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुए। प्रवासी जीवन, पहचान का संकट, जाति और सामाजिक संघर्ष जैसे विषयों पर कई फिल्मों और वेब-सीरीज़ का निर्माण हुआ। विशेष रूप से 'दि नेमशेक' की निर्देशक मीरा नायर ने प्रवासी भारतीय अनुभव को विश्व-स्तर पर लोकप्रिय बनाया। इसी प्रकार मिडनाइट चिल्ड्रन ने इतिहास और कल्पना के मेल को सिनेमा में रूपांतरित किया। इन कृतियों ने फिल्मकारों को यह समझाया कि व्यक्तिगत कहानियों के माध्यम से भी बड़े सामाजिक और ऐतिहासिक प्रश्नों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

भारतीय भाषाओं के समृद्ध परिदृश्य में ओड़िया साहित्य का विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान है। इसकी जड़ें प्राचीन काव्य-परंपरा, भक्ति आंदोलन, लोकसंस्कृति और आधुनिक यथार्थवाद में गहराई से निहित हैं। सरलादास द्वारा रचित ओड़िया महाभारत से लेकर फकीर मोहन सेनापति के यथार्थवादी उपन्यासों तक, यह साहित्य लोक जीवन, सामाजिक संरचना और मानवीय संवेदना का सशक्त दस्तावेज़ रहा है। इक्कीसवीं सदी में ओड़िया कृतियों का अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में व्यापक अनुवाद हुआ। सीताकांत महापात्र की कविताएँ अनेक भाषाओं में अनूदित होकर विश्व मंच तक पहुँचीं। उनकी रचनाओं में आदिवासी संस्कृति, प्रकृति और आध्यात्मिकता का जो गहन चित्रण है, वह विश्व साहित्य के इको-क्रिटिसिज़्म और सांस्कृतिक अध्ययन से जुड़ता है। इसी प्रकार सीताकांत महापात्र की कविताओं में आधुनिक मनुष्य की अस्तित्वगत पीड़ा और दार्शनिक संवेदना दिखाई देती है, जो वैश्विक आधुनिकतावादी कविता से साम्य रखती है।

ओड़िया साहित्य ने विश्व साहित्य में अपनी पहचान मुख्यतः यथार्थवाद, मानवतावाद और क्षेत्रीयता की सार्वभौमिकता के माध्यम से बनाई है। फकीर मोहन सेनापति का उपन्यास 'छ माण आठ गुंठा' औपनिवेशिक शोषण और ग्रामीण जीवन की विडंबना का ऐसा चित्रण प्रस्तुत करता है, जो विश्व के किसी भी उपनिवेशित समाज से साम्य रखता है। इसमें व्यंग्य, विडंबना और सामाजिक आलोचना का अद्भुत संयोजन मिलता है, जो इसे उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श का महत्वपूर्ण ग्रंथ बनाता है। आधुनिक काल में गोपीनाथ मोहंती और सीताकांत महापात्र जैसे रचनाकारों ने आदिवासी जीवन, अस्तित्व-बोध और प्रकृति-चेतना को साहित्य में प्रतिष्ठित किया, जिससे ओड़िया साहित्य विश्व साहित्य के इको-क्रिटिसिज़्म और सबाल्टर्न स्टडीज़ जैसे विमर्शों से जुड़ सका। ओड़िया साहित्य ने सिनेमा को कथानक, चरित्र और सांस्कृतिक संवेदना प्रदान की है। अनेक ओड़िया फिल्मों की आधारभूमि साहित्यिक कृतियाँ रही । जिनमें सामाजिक यथार्थ, लोकसंस्कृति और पारिवारिक संबंधों की गहनता दिखाई देती है। मनोहर चौधरी और प्रशांत नंदा जैसे फिल्मकारों ने साहित्यिक कृतियों को रूपांतरित कर सिनेमा में क्षेत्रीय अस्मिता को स्थापित किया। विशेष रूप से मृणाल सेन द्वारा निर्देशित माटीरा मणिषा, जो ओड़िया लेखक कालिंदी चरण पाणिग्रही की कृति पर आधारित है, भारतीय समानांतर सिनेमा में एक मील का पत्थर मानी जाती है। इस फिल्म में ग्रामीण जीवन, नैतिक द्वंद्व और मानवीय संबंधों की सूक्ष्मता का यथार्थवादी चित्रण है, जो साहित्य और सिनेमा के सशक्त अंतर्संबंध को दर्शाता है। ओड़िया साहित्यकारों ने आदिवासी और हाशिए के समाज की समस्याओं को विश्व के सामने रखा। प्रतिभा राय के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता, सामाजिक न्याय और मानवीय संघर्ष का व्यापक चित्रण मिलता है। उनकी कृति 'यज्ञसेनी' को कई भाषाओं में अनूदित किया गया, जिससे भारतीय मिथक का स्त्री-दृष्टि से पुनर्पाठ विश्व स्तर पर चर्चित हुआ।

भारतीय साहित्य और रंगमंच के क्षेत्र में गिरीश कर्नाड का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे आधुनिक भारतीय नाटककार, अभिनेता, निर्देशक और चिंतक थे, जिन्होंने कन्नड़ तथा भारतीय अंग्रेज़ी रंगमंच को नई दिशा दी। उनकी रचनाओं में इतिहास, मिथक, लोककथा और आधुनिक जीवन की समस्याओं का सशक्त समन्वय मिलता है। गिरीश कर्नाड ने भारतीय परंपरा को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर

नाटक को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उनकी कृतियाँ यह सिद्ध करती हैं, कि भारतीय मिथक और इतिहास आज भी समकालीन समस्याओं को समझने का सशक्त माध्यम हैं। गिरीश कर्नाड की रचनाएँ भारतीय साहित्य और रंगमंच की अमूल्य धरोहर हैं, जिन्होंने आधुनिक भारतीय नाटक को नई पहचान और अंतरराष्ट्रीय सम्मान दिलाया।

निष्कर्ष:

भारतीय साहित्य और सिनेमा का वैश्वीकरण भारत की सांस्कृतिक शक्ति और सृजनात्मकता का प्रमाण है। यह केवल मनोरंजन या साहित्यिक प्रसार नहीं, बल्कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का आधुनिक रूप है जहाँ भारत अपनी पहचान बनाए रखते हुए विश्व से संवाद करता है। शोध में पाया गया कि भारतीय साहित्य का वैश्वीकरण मुख्यत: अनुवाद, अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों, प्रवासी भारतीय लेखकों तथा वैश्विक प्रकाशन संस्थानों के माध्यम से संभव हुआ। भारतीय सिनेमा ने भी विश्व स्तर पर उल्लेखनीय पहचान बनाई है। यथार्थवादी सिनेमा के क्षेत्र में सत्यजीत रे की फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भारतीय सिनेमा को प्रतिष्ठा दिलाई। वहीं लोकप्रिय सिनेमा के अंतर्गत लगान, बाहुबली तथा आरआरआर जैसी फिल्मों ने वैश्विक दर्शकों को आकर्षित किया। ओड़िया साहित्य ने अपनी क्षेत्रीय जड़ों को बनाए रखते हुए विश्व साहित्य और सिनेमा को नई संवेदनाएँ, कथानक और दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। यह साहित्य सिद्ध करता है कि किसी भी भाषा की सृजनात्मक शक्ति उसकी लोकसंस्कृति और मानवीय अनुभवों में निहित होती है।

संदर्भ सूची:

1. डॉ नगेन्द्र, विचार और विवेचन पृष्ठ सं – 120
2. K. Romanian, Is There an Indian Way of Thinking? An Informal Essay, पृष्ठ: सं - 47 (Contribution to Indian Sociology, Vol. 23, No.1)
3. Rabindranath Tagore, Nationalism, पृष्ठ: सं-72
4. Sisirkumar Das, A History of Indian Literature 1800–1910, पृष्ठ: सं - 3
5. Rushdi Salman, Midnight Children, P.N.-109.
6. Roy arundhti, The God Of Small Things, P.N.-32
7. Jhumpa lahiri, The Name Sake, P.N.-26
8. Amitabh Ghosh, he Shadow Lines, P.N.-151